नासिरा शर्मा की कहानी में नारी अस्मिता

ज्योती विठ्ठलराव लोखंडे

पिपल्स कॉलेज, नांदेड , महाराष्ट्र.

सारांश :

आज हर किसी को प्रेमिका, माँ, बहन, पत्नी चाहिए। पर किसी को बेटी नही चाहिए। २१ वी सदी में स्त्री-पुरूष समान माननेवाले इस देश में आज भी लड़को को ही ज्यादा महत्व दिया जाता है। स्त्री के साथ भेदभाव उसके जन्म के पूर्व से ही प्रारम्भ हो जाता है। सोनोग्राफी के माध्यम से गर्भवती स्त्री के गर्भ में पुत्र है या पुत्री यह जानकारी प्राप्त कर ली जाती है। यदि लड़का होनेवाला है तो परिवारवाले बहुत खुश होते है। यदि लड़की होनेवाली है तो परिवारवाले बहुत दुःखी होते है। कही-कही पर खुशी मनाई जाती है कि लक्ष्मी घर आई है। पर ऐसे परिवार बहुत कम होते है। इसलिए आज पुरूषों की तुलना में स्त्रीयों की संख्या दिन-ब-दिन घटती जा रही है । उसे अहसास कराया जाता है कि वह लड़की है। इतनाही नही उसे कम सुविधाओं में भी संतुष्ट रहना पडता है।

प्रस्तावना:

लड़को की हर एक ख्याईशें पुरी की जाती है पर लड़कियों की ख्याईशों की ओर कोई ध्यानही नही देता। आज स्त्री-पुरूष समानता कही पर भी दिखाई नही देती। आज कोई भी स्त्री खुद का फैसला खुद नही ले पाती उसके हर एक फैसले एक पुरूष ही लेता है शादी से पहले पिता और शादी के बाद पति। आज स्त्री हर क्षेत्र में आगे बढ रही है। उच्च पद पर भी काम कर रही है भले वो कितनी बड़ी अफरस क्यो न हो उसे आज भी दुय्यम स्थान ही दिया जाता है।

लड़की की इच्छा को किस तरह अनदेखा । किया है। पहलें घरवालोंने, फिर शादी के बाद ससुरालवालो ने इसका चित्रण नासिरा शर्माजी ने 'अपनी कोख' इस कहानी में बखुबी किया है। इस कहानी की नायिका साधना है। जो पढ़लिखकर आई पी.एस.अफसर बनना चाहती थी। लेकिन उसकी शादी जल्दी ही कर देने से उसका आई.पी.एस बनने का सपना चुर-चुर हो जाता है। बुआ कहती है आगे की पढाई ससुराल में जाकर करना। शादी के बाद तो घर, गृहस्थी, सदाचार सत्कार करने में समय ऐसा निकल जाता की किताब तो दुर अखबार भी खोलकर नही देख पाती थी।

साधना का पति संदीप है। साधना एक-दो बार पढ़ाई के बारे में कहती है तो उसे इम्तिहान देने की इजाजत मिलती है। जब घर से किताबे मँगवाकर तैयारी में लग गई तो पता चला कि वह गर्भवती है। वह अभी बच्चा नही चाहती थी। एम.ए. के बाद कंपीटीशन के इम्तिहान में बैठना चाहती है । साधना एबॉर्शन करना चाहती थी पर संदीप मना कर देता है। संदीप साधना को समझाता है की बच्चा वह चाहता है और बच्चा उसका अकेला का नही है। यहा पर भी उसकी इच्छा की ओर अनदेखा किया जाता है। यहां स्त्री का बच्चे को जन्म देना उसके इच्छा विरूध्द है जो पुरूष सत्ताक समाज लाद रहा है। ''वह है क्या इंसान है या पालतू जानवर जिसको प्यार तो सब करते है, मगर बाँधे जंजीर में रखना चाहते है। आखिर क्यों ?''[१] कितना बड़ा सच नासिरा शर्माजीने प्रस्तुत किया है।

समाज की दृष्टि में एक स्त्री पालतू जानवर की तरह है जो उसे सबका कहना मानना ही पड़ता है। ''उसको एक बात परेशान कर रही थी कि वह दुसरों का सपना पूरा करने में अपने को तबाह कर रही है।''[२] एक स्त्री को खुद का फैसला लेने का अधिकार यहा नही है।

कुछ महिनों बाद उसे लड़की होती है। ''वह अपने अधूरे सपने को अपनी बेटी में साकार करने की सोचने लगी। मन-ही-मन जाने कितनी दुर की बात सोचती एक पूरी जिंदगी तय कर लेती । उसे अपनी बेटी सरिता पुलिस कमिश्नर बनी पूरे समाज को बदलने में लगी हुई नजर आती और हर जगह अपनी तरक्की के पीछे माँ का हाथ बताती।''[३] अपने बेटी के द्वारा अपना सपना पूरा कर लेने की सोचती है।

दुसरी बार उसके कोख में बेटी होती है तो सास कहती है। बच्चा गिरा देना चाहिए। लडकियों की फौज तो बनानी नही है। साधना कहती है - ''मेरी लडकियाँ सिर्फ औलादे नही मेरा सपना होंगी। चाहती तो मै भी बेटा हूँ मगर लड़की की हत्या की कीमत पर

नही..... हरगिज नही।''[४] साधना लडकी की हत्या के विरुध्द मे है । साधना के इन्कार ने सास बहु के रिश्ते में मिठास से खटास आगई। दुसरी लड़की होती है। संदीप तिसरा बच्चा नही चाहता है। पर सास ने फिर पोते की रट लगाई और साधना तिसरी बार गर्भवती है। क्लीनीक जाकर पता करवा लेती है तो इस बार बेटा होता है।

यह जानकर साधना का मन नाच उठा वह खिलखिला उठी। नर्स कहती है इस बार आपकी सास आपकी आरती उतारेंगी। भारतीय परम्परा और पुरूषी मानसिकता ने स्त्रियों की मानसिकता भी बदल डाली है। वे भी पुरूषो की तरह स्त्री के हित के विरोध में सोचने लगती है। इसलिए तो वर्तमान मे पुरूषों के साथ-साथ स्त्री के उत्पीडन के लिए स्त्री जिम्मेदार है।

साधना चिंता मे डूबी है यदि लडका पैदा हुआ तो मेरी दोनो लडकियों को निगल जाएगा। लडके के आने से आगे सास बेटियों से बर्ताव ठीक नही रखेंगी ? और क्या पता संदीप भी बेटा पाकर बदल जाए ? सास को खुशखबर देना चाहिए या संदीप का दिया वचन निभाए साधना जब घर पहुँचती तो बुरी तरह से टुट चूकी थी। कोख में लड़का है पर वो एबॉर्शन करती है। कोई सुनकर कह उठता लड़का होते हुए भी एबॉर्शन घोर पाप है लडके को जन्म देने से सात जन्म सुधर जाते है। ऐसा कहते है। बुढापे की लाठी तो लड़के को मानते है। इस द्वीधा अवस्था से बाहर निकलने मे कामयाब होती है। ''लडके-लडकियों में भेद करनेवाला यह समाज तब तक बलवान बना रहेंगा जब तक नारी उसके इशारे पर चलती रहेगी। कोख उसकी है, वह चाहे तो बच्चा पैदा करे और न चाहै तो न पैदा करे।''[५]

साधना आधुनिक विचारोंवाली स्त्री के रूप में समाज के सामने आती है। सच ही तो कहा है की लड़के-लड़किंयों में अगर भेद करनेवाला समाज बलवान ही होता रहेगा पर नारी को अब उनके इशारों पर चलना छोडना पडगें तो ही स्त्री पुरुष समानता का चित्र कुछ और रहेगा। कहने को तो कह डालते है की स्त्री-पुरूष समान है। क्या आज भी नारी अपने खुद के फैसले इतने आसानी से ले पाती है ? साधनाने यह निर्णय लिया है अपने बेटियों के खातिर वह बेटे को जन्म नही देती है, बेटियों को ही वह सर्वस्व मानती है।

हमारे समाज को भी साधना का आदर्श लेना चाहिए और बेटियों का स्वागत करना चाहिए। कुछ हद्द तक यह आरंभ हो चुका है। नान्देड जिला के भोकर तहसिल में २२ स्त्रीयों ने सिर्फ दो लडकियों पर ही परिवार नियोजन किया है। लडकियों को ही अपना सहारा समझा है ।

विष्णु प्रभाकर कहते है की-''नारी ही तो धुरी है इस सृष्टि की। वही नरक का व्दार है, वही है चिर-प्रियसी चिर-कुमारिका उर्वशी। वही रणचंडी है। वही अन्नपूर्णा है। सरस्वती भी वही है और लक्ष्मी भी।''[६]

नारी को सम्मान दो। नारी के बिना संपूर्ण विश्व शून्य है। उसके जीवन का मुल मंत्र ही मान रहित सेवा तथा ईर्ष्या-व्देष का परित्याग है। अबला नाही को सबला बनाने का प्रयास किया जाए तो समाज प्रगती पथ पर जरुर आएगा ।

संदर्भसूची

		पृष्ठ क्र.
1)	अपनी कोख :- नासिरा शर्मा	97
2)	अपनी कोख :- नासिरा शर्मा	97
3)	अपनी कोख :- नासिरा शर्मा	101
4)	अपनी कोख :- नासिरा शर्मा	98
5)	अपनी कोख :- नासिरा शर्मा	103
6)	नासिरा शर्मा शब्द और संवेदना की मनोभुमि (सं. ललित शुक्ल) आलेख :- विष्णु प्रभाकर	16